एम.ए. (पूर्वार्द्ध) परीक्षा – 2011

(पत्राचार पाठ्यक्रम)

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

प्रथम पत्र : जैन इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं कला

समय : 3.00 घण्टे पूर्णांक : 80

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

***Note :** Attempt all questions. Each question carries equal marks.*

प्र. 1. प्रागैतिहासिक काल में जैन धर्म की स्थिति का वर्णन कीजिए।

Describe the position of Jainism in prehistoric period.

अथवा / OR

अरिष्टनेमि का जीवन परिचय और उनके योगदान का वर्णन कीजिए।

Disouss the life history and contribution of Aristanemi.

प्र. 2. जैन धर्म के प्रमुख तीर्थों का वर्णन कीजिए।

Describe the main piligrimages of Jaina religion.

अथवा / OR

जैन परम्परा में आष्टाह्निक पर्व के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

Explain the importance of Astanhika Parva in Jaina tradition.

प्र. 3. कर्नाटक तथा तमिलनाडु की जैन स्थापत्य कला का वर्णन कीजिए।

Describe the Jain architecuture of Karnataka and Tamil Nadu.

अथवा / OR

जैन धर्म का कला के क्षेत्र में क्या योगदान है?

What is the contribution of Jainism in the field of Art.

प्र. 4. जैन आगम साहित्य का संक्षिप्त परिचय लिखिए।

Write briefly about Jain Canonical Literature.

अथवा / OR

जैन साहित्य को आचार्य कुन्दकुन्द का क्या योगदान है? स्पष्ट कीजिए।

Write clearly the contribution of Kundakunda to Jain Literature.

प्र. 5. जैन दार्शनिक साहित्य पर एक निबन्ध लिखिए।

Write an essay on Jain philosophical literature.

अथवा / OR

संस्कृत काव्य को जैनाचार्यों का क्या योगदान है? स्पष्ट कीजिए।

Write clearly the contribution of Jain Acharyas to Sanskrit Literature.

♦♦♦

एम.ए. (पूर्वार्द्ध) परीक्षा – 2011

(पत्राचार पाठ्यक्रम)

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

द्वितीय पत्र : जैन तत्त्व मीमांसा एवं आचार मीमांसा

समय : 3.00 घण्टे पूर्णांक : 80

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।
Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. ''द्रव्य–गुण–पर्याय'' शीर्षक से एक शोधपूर्ण निबन्ध लिखिये।

Write a research article on the 'substance - quality mode'.

अथवा / OR

जैनदर्शन के अनुसार लोक का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

Explain the nature of Loka according to Jainism.

प्र. 2. आकाश द्रव्य की अवधारणा को भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शनों के साथ–साथ आधुनिक विज्ञान के सन्दर्भ में भी स्पष्ट करने का प्रयास कीजिए।

Explain the concept of space (Akash) with the reference of all Indian philosophies, western philosophies and modern science also.

अथवा / OR

जैनदर्शन में वर्णित आत्मा के स्वरूप को विस्तारपूर्वक स्पष्ट कीजिए।

Explain the concept of Soul (Atma) in detail according to Jainism.

प्र. 3. पुद्गल द्रव्य के स्वरूप को भेद–प्रभेद सहित स्पष्ट कीजिए।

Explain the nature of matter (pudgala Dravya) with its types and subtypes.

अथवा / OR

जैन आचार मीमांसा की तात्त्विक पृष्ठभूमि को स्पष्ट कीजिए।

Explain the metaphysical base of Jain Ethics.

प्र. 4. जैन श्रावकाचार पर एक निबन्ध लिखो।

Write an essay on Jain Ethics of householders (Shravakachar).

अथवा / OR

जैनाचार में अहिंसा का क्या स्थान है? स्पष्ट कीजिए।

Explain the role of non-violence in Jain Ethics.

प्र. 5. निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर टिप्पणियाँ लिखिये –

Write short note on any four of the following :

(i) षट्–आवश्यक / Satavashaka
(ii) धर्मास्तिकाय / Dharmastikaya
(iii) संल्लेखना / Sallekhna
(iv) पर्याय /Paryaya
(v) कालद्रव्य / Kala Dravya
(vi) स्कन्ध /Aggregate / Molecules / Skandha

♦♦♦

अथवा / OR

कर्म का अध्यात्मिक दृष्टिकोण लिखिए।

Explain the spiritual perspective of karma.

प्र. 4. कर्मबद्ध कैसे होते हैं?

How are the karma baddha ?

अथवा / OR

परिवर्तन की पद्धति लिखिए।

Write the process of parivartana (change)

प्र. 5. पुनर्जन्म की प्रक्रिया लिखिए।

Write the process of rebirth.

अथवा / OR

विविध वादों का मूल्यांकन कीजिए।

Evaluate the different Vadas.

♦♦♦

एम.ए. (पूर्वार्द्ध) परीक्षा – 2011

(पत्राचार पाठ्यक्रम)

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

तृतीय पत्र : ध्यान योग एवं कर्म मीमांसा

समय : 3.00 घण्टे पूर्णांक : 80

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. ऐतिहासिक साधना का विवेचन कीजिए।

Describe the historical sadhna.

अथवा / OR

ध्यान का स्वरूप बताते हुए ध्यान के प्रकारों का विवेचन कीजिए।

Describe the types of dhyana (meditation) with its nature.

प्र. 2. ध्यान के अंगों का वर्णन कीजिए।

Describe the angas (parts) of dhyana (meditation).

अथवा / OR

प्रेक्षाध्यान का अध्यात्मिक आधार लिखिए।

Write the spiritual base of Prekshadhyana.

प्र. 3. आत्मा एवं कर्म का सम्बन्ध लिखिए।

Write the relationship of Atma (soul) & Karma.

एम.ए. (पूर्वार्द्ध) परीक्षा – 2011

(पत्राचार पाठ्यक्रम)

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

चतुर्थ पत्र : जैन ज्ञान मीमांसा एवं जैन न्याय

समय : 3.00 घण्टे पूर्णांक : 80

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. जैन आगमों में वर्णित ज्ञान के स्वरूप एवं विशेषताओं का वर्णन करें।

Describe the nature of Gyana (knowledge) and its characteristics as propounded in Jain Agamas.

अथवा / OR

दर्शन के स्वरूप एवं भेदों का निरूपण करें।

Explain the concept and forms of Darshan.

प्र. 2. मतिज्ञान के स्वरूप एवं उसके भेदों–प्रभेदों का वर्णन करें।

Describe the nature of Matigynana and its types and subtypes.

अथवा / OR

आगमों में वर्णित श्रुतज्ञान की चर्चा एवं महत्त्व का मूल्यांकन करें।

Evaluate the discussion on Shruta Jnana and its importance as propounded in Jain Agamas.

प्र. 3. अवधिज्ञान के स्वरूप एवं भेदों पर प्रकाश डालते हुए अवधिज्ञान एवं मन:पर्यवज्ञान के अन्तर को स्पष्ट करें।

Throwing light on the nature of Avadhijnana and its kinds, explain distinction between Avadhi and Manahparyay Gyana.

अथवा / OR

केवलज्ञान एवं सर्वज्ञता की अवधारणा का निरूपण करें।

Describe the concept of Keval Gyana and Omniscience.

प्र. 4. भारतीय न्याय के विकास में जैन आचार्यों के योगदान का मूल्यांकन करें।

Evaluate the contribution of Jaina Acharyas in the development of Indian Logic.

अथवा / OR

पारमार्थिक प्रत्यक्ष की अवधारणा को स्पष्ट करें।

Elucidate the concept of Parmarthika Pratyaksha.

प्र. 5. निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए –

Write short notes on any four of the following :

(i) प्रत्यभिज्ञान / Pratyabhijnana

(ii) आगम प्रमाण / Agama Pramana

(iii) प्रमाण एवं प्रमिति का भेदाभेदवाद / Bhedabhedwad of Pramana and Pramiti

(iv) व्याप्ति / Vyapti

(v) हेतु का स्वरूप / Nature of Hetu

(vi) दृष्टान्त / Dristanta

(vii) हैत्वाभास / Hetwabhasa

♦♦♦

प्र. 3. भगवती सूत्र का संक्षिप्त विषयगत परिचय देते हुए आत्म कर्तृत्ववाद की विवेचना प्रस्तुत कीजिए।

Give short introduction of Bhagwati Sutra and critically explain Atma-Kartritvavad.

अथवा / OR

जैन दर्शन के अनुसार आत्मा के ..... देह परिमाण को सिद्ध करें।

Prove the soul's body-pervasiveness according to Jain Philosophy.

प्र. 4. उत्तराध्ययन सूत्र के आधार पर विनय के स्वरूप का विवेचन करें।

Explain the nature of 'modesty' as described in Uttradhyayana Sutra.

अथवा / OR

दशवैकालिक के प्रथम अध्ययन के प्रतिपाद्य विषय पर प्रकाश डालते हुए श्रमण जीवन में इसकी महत्ता लिखिए।

Throwing light on the subject matter of the first chapter of Dasvaikalika, write down its importance in the life of a 'Shramana'.

प्र. 5. समयसार का विषय परिचय लिखते हुए इसके निर्धारित पाठ्यांश में वर्णित जीव–अजीव का स्वरूप लिखिए।

Giving the introduction of the content of Samyasara, write down the Intrinsic.

अथवा / OR

निम्न की व्याख्या कीजिए / Explain the following :

(क) सुदपरि चिदाणुभूदा सव्वस्स वि काम भोगबंधकहा।
एयत्तस्सुवलंभो णवरि ण सुलहो विहत्तस्स।।

(ख) जो पस्सदि अप्पाणं अबद्धपुट्ठं अणण्णयं णियदं।
अविसेसमसंजुत्तं तं सुद्धणयं वियाणीहि।।

♦♦♦

एम.ए. (उत्तरार्द्ध) परीक्षा – 2011

(पत्राचार पाठ्यक्रम)

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

पंचम पत्र : जैन आगम

समय : 3.00 घण्टे पूर्णांक : 80

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. आचारांग के अनुसार पुनर्जन्म की अवधारणा का विवेचन कीजिए।

Explain the concept of Re-birth according to Acaranga Sutra.

अथवा / OR

निम्न की व्याख्या कीजिए / Explain the following :

(क) जे लोयं अब्भाइक्खइ, जे अत्ताणं अब्भाइक्खइ।
जे अत्ताणं अब्भाइक्खइ, से लोयं अब्भाइक्खइ।।

(ख) तं परिण्णाय मेहावी णेव सयं वणस्सइ–सत्यं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं वणस्सइ–सत्यं समारंभावेज्जा, पेवण्णे वणस्सइ–सत्यं समारंभंते समणु जाणेज्जा।

प्र. 2. सूत्रकृतांग के अनुसार बंधन और मुक्ति का विश्लेषण प्रस्तुत कीजिए।

Give the analysis of bondage and freedom from bondage as enumerated in Sutra Kritanga.

अथवा / OR

सूत्रकृताङ्ग के आधार पर नियतिवाद की समीक्षा कीजिए।

Write a critical note on the concept of Niyati Vada on the basis of Sutrakritanga Sutra.

अथवा / OR

अनेकान्तवाद दार्शनिक मतभेदों का समन्वय किस प्रकार करता है?

How does the doctrine of Anekantavada synthesise different philosophical view points?

प्र. 4. सप्तभंगी के सात भंगों को स्पष्ट कीजिये। सप्तभंगी में सात ही भंग क्यों होते हैं?

Discuss the seven-alternatives (Bhangas) of Sapta-Bhangi. Why only the seven bhangas in Saptabhangi?

अथवा / OR

वस्तु के स्वभाव लक्षण (स्व–स्वरूपत्व) और विभाव लक्षण (पररूपत्व) को स्पष्ट कीजिये।

Discuss the real nature of the thing and the resultant nature of thing.

अथवा / OR

अनेकान्तवाद, स्याद्वाद और सप्तभंगी के पारस्परिक सम्बन्ध को स्पष्ट कीजिये।

Explain the mutual relation between Anekantavada, Syadavada and Suptabhangi.

प्र. 5. अनेकान्तवाद, स्याद्वाद और सप्तभंगी के उद्भव एवं विकासयात्रा को समझाईये।

Discuss the origin and development of Anekantavada, Syadavada and Saptabhangi.

अथवा / OR

किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिये –

Write short notes on any two of the following :

(i) चार प्रकार के निक्षेप / Four kinds of Nikshepa

(ii) नयों के प्रकार / Kinds of Nayas

(iii) अव्यक्त भंग / Pressible Unex Bhanga ♦♦♦

एम.ए. (उत्तरार्द्ध) परीक्षा – 2011

(पत्राचार पाठ्यक्रम)

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

षष्ठ पत्र : अनेकान्त, नय, निक्षेप और स्याद्वाद

समय : 3.00 घण्टे पूर्णांक : 80

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. अनुयोगद्वार सूत्र के आधार पर सप्त नयों के स्वरूप का निरूपण कीजिये।

Explain the nature of seven nayas (view points) according to Anuyogadvara sutra.

अथवा / OR

भगवतीसूत्र के आधार पर द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के स्वरूप की विवेचना कीजिये।

Explain the concepts of dravya, kshetra, kala and bhava according to Bhagavati Sutra.

प्र. 2. व्यञ्जन पर्याय और अर्थपर्याय का स्वरूप स्पष्ट कीजिये।

Explain the nature of Vyajnaparyaya and Artha Paryaya ?

अथवा / OR

जीव एवं पुद्गल के भेदाभेद को विभिन्न दृष्टिकोणों से स्पष्ट कीजिये।

Discuss the unity and difference between Jiva and Pudgala according to various view points.

प्र. 3. अनेकान्तवाद के आधार पर वस्तु या सत् का स्वरूप स्पष्ट कीजिये।

Explain the nature of reality according to the doctrine of Anekantavada.

एम.ए. (उत्तरार्द्ध) परीक्षा - 2011

(पत्राचार पाठ्यक्रम)

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

सप्तम पत्र : जैन धर्म-दर्शन और भारतीय धर्म-दर्शन

समय : 3.00 घण्टे पूर्णांक : 80

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. जैन दर्शन के अनुसार 'सत' के स्वरूप की व्याख्या कीजिए ?

Explain the nature of 'Sat' according to Jain Philosophy.

अथवा / OR

बौद्ध दर्शन के अनुसार कारण-कार्य सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए।

Explain the theory of cause and effect according to Buddha Philosophy.

प्र. 2. वेदान्त एवं सांख्य दर्शन में आत्मा के स्वरूप एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।

Throw light on the nature and importance of soul in Vedanta and Samkhya philosophy.

अथवा / OR

बौद्ध एवं जैन दर्शन के अनुसार अपरिग्रह का विवेचन कीजिए।

Discuss the theory of non-possession according to Jain and Buddha philosophy.

प्र. 3. जैन एवं योगदर्शन के अनुसार व्रत के स्वरूप पर निबन्ध लिखिए।

Write an essay on 'Vrata' according to Jain and Yoga philosophy.

अथवा / OR

बौद्ध दर्शन के अनुसार कर्म के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

Throw light on the nature of 'Karma' according to Buddha philosophy.

प्र. 4. न्याय एवं मीमांसा दर्शन के अनुसार प्रमाण का स्वरूप विस्तार से लिखिए।

Write in detail the nature of Pramana according to Nyaya and Mimamsa Philosophy.

अथवा / OR

बौद्ध दर्शन के अनुसार अनुमान प्रमाण की व्याख्या कीजिए।

Describe the Anumana Pramana according to Buddha Philosophy.

प्र. 5. निम्नलिखित में से किन्हीं चार पर टिप्पणी लिखिए -

Write short notes on any four of the following :

1. पुद्गल / Pudgala
2. ध्यान-योग / Meditation-Yoga
3. सहज योग / Sahaja Yoga
4. ज्ञान / Knowledge
5. भक्ति-गीता / Bhakti-Gita

♦♦♦

Explain mind-body relation in the philosophy of Leibnitz, Spinoza and Jain?

प्र. 3. कारणता के सिद्धान्त को ह्यूम स्वीकार करता है या नहीं ? स्पष्ट करें एवं काण्ट के कारणता सिद्धान्त पर प्रकाश डालें?

Whether Hume accepts the theory of causation or not? Along with this highlight the kantian causation theory ?

अथवा / OR

जगत् सम्बन्धी विचार के संदर्भ में बर्कले, जैन एवं प्लाटिनस की विचारधारा को स्पष्ट करें?

Explain the concept of world / universe in the view of Berkley, Jainism and Platinus ?

प्र. 4. जैन धर्म एवं इस्लाम धर्म की तुलना सर्वांगीण दृष्टि से करें ?

Compare Jainism with Muslims in all aspects ?

अथवा / OR

जैन धर्म एवं सूफी धर्म में साम्य बिन्दुओं की चर्चा करें ?

Deal the points of overlaping between Suffism and Jainism ?

प्र. 5. अणुव्रत किस प्रकार समाज संरचना में अपनी भूमिका निभा सकता है?

How anuvrat can help in creating healthy social structure?

अथवा / OR

पर्यावरण सुरक्षा में जैन सिद्धान्तों की क्या प्रासंगिकता है?

Explain the relevance of Jain doctrine in Environmental protection.

♦♦♦

एम.ए. (उत्तरार्द्ध) परीक्षा - 2011

(पत्राचार पाठ्यक्रम)

विषय : जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन

अष्टम पत्र : जैन धर्म-दर्शन और भारतीयेतर धर्म-दर्शन

समय : 3.00 घण्टे पूर्णांक : 80

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

Note : Attempt all questions. Each question carries equal marks.

प्र. 1. जैन आत्मवाद के साथ लाइबनीज के चिदणुवाद की तुलना करें, साम्य-वैषम्य की समीक्षा करें।

Compare the Jain concept of soul with the Leibnitz's monads and explain critically the points of agreements, and disagreements.

अथवा / OR

जैन आचार शास्त्र काण्ट के नीतिशास्त्र की तरह निरपेक्ष है या सापेक्ष, स्पष्ट करें।

Prove whether Jain Ethics is absolute in principle or relative with the Kantian ethics.

प्र. 2. डेकार्ट के दर्शन में आत्मस्वरूप की जैन दर्शन में मान्य आत्मस्वरूप से तुलना करें।

Explain the concept of soul in Descartes philosophy and compare it with Jain concept of soul ?

अथवा / OR

आत्मा-शरीर सम्बन्ध के विषय में लाइबनीज, स्पिनोजा एवं जैन दर्शन की मान्यता को स्पष्ट करें?